।। अथ श्रीसाईसच्चरित।। अध्याय १८ वा।।

।। श्रीगणेशाय नमः।। श्रीसरस्वत्यै नमः।। श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीकुलदेवतायै नमः।। श्रीसीतारामचंद्राभ्यां नमः।। श्रीसद्‌गुरुसाईनाथाय नमः। जय सद्‌गुरो परम नित्या। जय सद्‌गुरो ब्रह्मसत्या। अनुभवें दाविसी जगन्मिथ्या। मायानियंत्या जय जया।।१।। जय जयाजी अनाद्यनंता। जय जयाजी द्वंद्वातीता। जय जयाजी विकाररहिता। निजरूप बोधिता तूं एक।।२।। सागरीं रिघाली करूं आंघोळी। परतेल काय सैंधवाची पुतळी। हें तों न घडे कदाकाळीं। तुजजवळींही तैसेंच।।३।। वेदश्रुति हीं जयाविशीं। विवाद करिती अहर्निशीं। तें अलक्ष्य तूं बोटानें दाविशी। अप्रयासें भक्तांसी।।४।। आलाच दैवाचा योग जर कां। पडला पुरे कां तुझा गर्का। मग हा आपुला वा हा परका। नाहीं या कुतर्का स्थान तैं।।५।। गताध्यायीं कथा पावन। ब्रह्मगुंडाळ्याचें आविष्करण। ब्रह्मार्थियाचें लोभावरण। प्रतिबंधकारण वर्णिलें।।६।। आतां मदनुग्रहकथा। श्रवण कीजे आदरें श्रोतां। अनुभवा येईल तुमचिया चित्ता। मार्गदर्शकता बाबांची।।७।। हीही आहे गोड वार्ता। ती मी कथितों यथार्थता। श्रोतां आपुलालिया स्वार्था। स्वस्थचित्ता परिसावी।।८।। असतां श्रवणार्थी सादर। वक्त्यास उल्हास आणि आदर। हृदया फुटे प्रेमपाझर। आनंदनिर्भर उभयतां।।९।। न करितां बुद्धिभेद तिळभर। जैसा जयाचा अधिकार। तैसाच तयास मार्ग साचार। उपदेशपुरःसर दाविती।।१०।। ऐसें कितीएकांचे मतें। गुरुनें जें कथिलें ज्यातें। कथितां नये तें इतरांतें। विफल होते गुरुवाणी।।११।। हें तों केवळ काल्पनिक। नसतें स्तोम निरर्थक। प्रत्यक्ष काय स्वप्नोक्तही देख। कथिती सद्‌बोधक सकळांतें।।१२।। मानाल जरी हें अप्रमाण। बुधकौशिक ऋषि प्रमाण। रामरक्षा दीक्षेचें स्वप्न। केलें कथन सर्वत्रां।।१३।। गुरु वर्षाकाळींचे घन। आवडीं वर्षती स्वानंदजीवन। तें काय ठेवावें कोंबून। यथेच्छ सेवून सेववावें।।१४।। लेंकराची धरूनि हनुवटी। माय तयाच्या आरोग्यासाठीं। मायाळुपणें पाजी गुटी। तीच हातवटी बाबांची।।१५।। मार्ग तयांचा नव्हता गुप्त। कोण्या रीतीं कैसा अवचित। निजभक्तांचा हेतु पुरवित। सावचित्त तें ऐका।।१६।। धन्य धन्य सद्‌गुरुसंगती। कोणा वर्णवे तियेची महती। आठवितां एकेक तयांच्या उक्ती। निजस्फूर्ति उचंबळे।।१७।। प्रेमें करितां ईश्वरार्चन। गुरुसेवा गुरुपूजन। होईल गुरुगम्य संपादन। इतर साधन तें फोल।।१८।। विक्षेप आणि आवरण। तेणें हा भवमार्ग संकीर्ण। गुरुवाक्य दीपकिरण। निर्विघ्न मार्गदर्शक।।१९।। गुरु प्रत्यक्ष ईश्वर। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर। गुरुचि वस्तुतः परमेश्वर। ब्रह्म परात्पर गुरुराय।।२०।। गुरु जननी गुरु पिता। गुरु त्राता देव कोपतां। गुरु कोपतां कोणी न त्राता। सदा सर्वदा जाणावें।।२१।। गुरु दर्शक प्रवृत्तीचा। तीर्थव्रत निवृत्तीचा। धर्माधर्म विरक्तीचा। वेदश्रुतीचा प्रवक्ता।।२२।। उघडूनि बुद्धीचे डोळे। संत दाविती निजरूप-सोहळे। पुरविती भक्तीचे डोहळे। अति कोवळे कारुणिक।।२३।। तेणें विषयवासना मावळे। निद्रेंतही ज्ञानचि चावळे। विवेक वैराग्य फळ जावळें। कृपाबळें हातीं ये।।२४।। जाहलिया सत्समागम। संतसेवा संतप्रेम। स्वयें भक्तकामकल्पद्रुप। सर्व श्रम निवारी।।२५।। सदा असावें सत्परायण। कराव्या संतकथा श्रवण। वंदावे संतांचे चरण। पापक्षालन होईल।२६।। लॉर्ड रे जैं इलाखाधिपती। क्राफर्डशाही घातली पालथी। तत्कालीन एक प्रसिद्धकीर्ति। लागले भक्तीस बाबांच्या।।२७।। हा संसारत्तापत्रय खोटा। व्यापारधंद्यांत आला तोटा। मनास कंटाळा वीट मोठा। घेतला लोटा निघाले।।२८।। चित्त झालें अति अस्थिर। वाटे प्रवासा जावें दूर। सेवावा एकान्त सुखकर। ऐसा विचार दृढ केला।।२९।। जीव जैं पडे अतिसंकटीं। देव आठवे तदा कष्टीं। मग तो भक्त करी हाकाटी। लागे पाठी देवाच्या।।३०।। परि न लागतां दुष्कर्मा ओहटी। देवाचें नांव येईना ओठीं।

मग सप्रेमता पाहूनि जगजेठी। संतभेटी करवितो।।३१।। तैसेंच त्या भक्ताचें जाहलें। पाहूनि संसारा अति कावले। स्नेही तयाचे वदते झाले। हितवचन वहिलें तें ऐका।।३२।। कां हो आपण शिरडीस जाना। समर्थ साईनाथांचे दर्शना। करा कीं तयांसी प्रार्थना। दयाघना त्या संता।।३३।। क्षणैक संतसंगती लाधते। चंचल मन निश्चल होतें। तात्काळ हरिचरणीं जडतें। मग अवघड तें परताया।।३४।। देशोदेशींचे लोक जाती। साईपदरजीं लोळती। महाराजांच्या आज्ञेंत वर्तती। अभीष्ट पावती सेवेनें।।३५।। ऐसी तयांची प्रसिद्ध कीर्ति। आबालवृद्ध सर्व जाणती। तयांसी येतां काकुळती। दुःखनिवृत्ति लाधाल।।३६।। शिरडी सांप्रत पवित्र स्थान। यात्रा वाहे रात्रंदिन। तुम्हीही पहा अनुभव घेऊन। संतदर्शन हितकारी।।३७।। अवर्षणें उद्विग्न अकिंचन। अवचित वर्षे विपुल घन। होतां भुकेनें व्याकुळ प्राण। पंचपक्वान्न वाढिलें।।३८।। तैसी स्नेह्यानें कथिली वार्ता। मानवली ती तया भक्ता। अनुभव घ्यावा आलें चित्ता। धरिला रस्ता शिरडीचा।।३९।। आले गांवीं घेतलें दर्शन। पायीं घातलें लोटांगण। तात्काळ निवाले नयन। समाधान जाहलें।।४०।। जें पूर्णब्रह्म सनातन। स्वयंज्योति निरंजन। पाहूनि ऐसें साईंचें ध्यान। सुप्रसन्न मन जाहलें।।४१।। वाटलें पूर्वार्जित सभाग्यता। तेणेंचि हे पाय आले हाता। चित्तास लाधली शांतता। निश्चिंतता दर्शनें।।४२।। उपनाम जयांचें साठे। अंतरीं निश्चयाचे मोठे। गुरुचरित्र-पारायण नेटें। नेमनिष्ठें आरंभिलें।।४३।। सप्ताह पूर्ण होतां निशीं। बाबा देती दृष्टांत त्यांसी। निजकरीं घेऊनि त्या पोथीसी। अर्थ साठ्यांसी समजावीत।।४४।। स्वयें स्थित निजासनीं। समोर साठ्यांस बैसवूनि। गुरुचरित्राची पोथी घेऊनि। निरूपणीं तत्पर।।४५।। बाबा ग्रंथावर्तन करिती। पुराणिकसे कथा निरूपिती। साठे श्रोतेपणें स्वस्थचित्तीं। सादर ऐकती गुरुकथा।।४६।। हें काय ऐसें उफराटें। विचारांत पडले साठे। वाटलें तयांस आश्चर्य मोठें। कंठ दाटे प्रेमानें।।४७।। अज्ञानतमउशीसी। ठेवूनियां मानेपाशीं। घोरत पडले जे वासनाकुशीसी। त्यां जागविसी दयाळा।।४८।। पहा ऐसियाही समयासी। थापटोनियां आपणासी। गुरुचरित्र-पीयूषासी। पाजिलेंसी कृपाळा।।४९।। असो ऐसा दृष्टान्त घडतां। साठे जागृत झाले तत्त्वतां। कळविती काकासाहेब दीक्षितां। साद्यंत वार्ता घडली ती।।५०।। म्हणती न कळे याचा अर्थ। जाणती एक बाबा समर्थ। काय कीं न कळे त्यांचे मनांत। काका साद्यंत पुसा कीं।।५१।। पुनश्च पाठ सुरू करावा। कीं झाला तितुकाचि पुरा समजावा। मनोदय बाबांचा पुसावा। तेणेंच विसांवा ये मना।।५२।। मग काका बाबांप्रती। समय पाहूनि स्वप्न निवेदिती। देवा आपण या दृष्टान्तीं। काय साठ्यांप्रती जाणविलें।।५३।। सप्ताह ऐसाचि सुरू ठेवावा। किंवा येथूनि पुरा करावा। दृष्टान्तार्थ स्वयें विवरावा। मार्ग दावावा तयांतें।।५४।। इतुकीच पायीं माझी विनंती। साठे मोठे भक्त भावार्थी। कृपा व्हावी तयांवरती। पुरवावी आर्ती तयांची।।५५।। मग बाबा आज्ञापिती। ''होऊं द्या आणिक एक आवृत्ती। वाचितां ही गुरुची पोथी। भक्त होती निर्मळ।।५६।। या पोथीचें पारायण। करितां होईल कल्याण। परमेश्वर होईल प्रसन्न। भवबंधन सुटेल''।।५७।। तें जंव बाबांनीं केलें कथन। करीत होतों मी पादसंवाहन। झालों अंतरीं विस्मयापन्न। वृत्ति स्फुरण पावली।।५८।। बाबा तरी हें ऐसें कैसें। साठ्यांस फळ तों अल्पायासें। माझीं गेलीं वर्षानुवर्षें। सातचि दिवसें फळ त्यांसी।।५९।। एकचि पाठ गुरुचरित्राचा। केला साठ्यांनीं सातां दिसांचा। चाळीस वर्षांचा पाठ जयाचा। विचार तयाचा नाहींच कां।।६०।। एकासी फळ तों सात दिवसें। एकाचीं निष्फळ सात वर्षें। वाट पाहें मी चातक प्रकर्षें। दयाघन हा वर्षेल कैं।।६१।। येईल कैं ऐसा दिवस। प्रसन्न होईल हा संतावतंस। फेडील माझिया मनींची हौस। देईल उपदेश मज काय।।६२।। भक्तवत्सल श्रीगुरु साई। पहा तयांची काय नवलाई। मनीं वृत्ति उठली ते समयीं। तात्काळ त्यांहीं जाणिली।।६३।। ऐशाच अविद्येच्याही पोटीं। बऱ्या वाईट कोट्यनुकोटी। वासना उठती उठाउठी। तितुक्यांची दृष्टी तयांना।।६४।। ''मन चिंती तें वैरी न चिंती''। हें तों सर्वांसी ठावें निश्चितीं। इतर कोणी जरी तें नेणती। महाराज ओळखती तात्काळ।।६५।। परि

ती माय अतिकृपाळ। पोटांत घाली निंद्य सकळ। अनिंद्य पाहूनि प्राप्तकाळ। तितुक्यास चालन देई ती।।६६।। तंव तें मनोगत जाणूनि। बाबा वदती मजलागूनि। ऊठ त्या शाम्याकडे जाऊनि। रुपये घेऊनि पंधरा ये।।६७।। बैसें तयापासीं क्षणभर। गोष्टी बोला परस्पर। दक्षिणा देईल ती घेऊनि सत्वर। येईं माघारा परतोन।।६८।। कृपा उपजली साईनाथा। दक्षिणेच्या करूनि निमित्ता। म्हणती माग जा आतांचे आतां। रुपये मजकरितां शामाकडे।।६९।। झालियावरी ऐसी आज्ञा। बैसावया पुढें कोणाची प्राज्ञा। बैसतां ती होईल अवज्ञा। घेऊनि अनुज्ञा उठलों।।७०।। मग मीं तात्काळ गमन केलें। शामरावही बाहेर आले। होतें नुकतेंच स्नान केलें। नेसत ठेले धोतर।।७१।। नुकतेंच झालें होतें स्नान। धूतवस्त्र परिधान करून। होते घालीत धोतराची चूण। मुखें गुणगुण नामाची।।७२।। म्हणती काय मध्येंच कोठें। मशिदींतूनि आलांत वाटे। चर्येवरी कां चंचलता उमटे। ऐसे एकटे कां आज।।७३।। या बैसा मी आतांच न्हालों। हा पहा धोतर चुणीत आलों। जातों देवावर पाणी घालों। समजा परतलों ऐसाचि।।७४।। आपण करितां तांबूल भक्षण। तों मी सारितों पूजाविधान। करूं मग वार्ता सावधान। समाधानपूर्वक।।७५।। माधवराव घरांत जाती। मग तेथेंच खिडकीवरती। होती नाथभागवताची पोथी। सहज हातीं घेतली।।७६।। यदृच्छेनें ग्रंथ उघडला। अकल्पित जेथें आरंभ केला। प्रातःकाळीं जो अपूर्ण टाकिला। वाचावया आला तोच भाग।।७७।। अति आश्चर्य मना वाटलें। प्रातःकाळीं वाचन जें हेळसिलें। बाबांनीं तें संपूर्ण करविलें वरी लाविलें नियमन।।७८।। नियमन म्हणजे नियमें वाचन। न होतां संपूर्ण निश्चित परिशीलन। अपुरें टाकूनि नियमितोपासन। स्थानापासून चळूं नये।।७९।। आतां थोडीसी उपकथा। ओघास आली न ये टाकितां। श्रोतां परिसावी सादरतां। या नाथभागवतासंबंधें।।८०।। तें हें नाथभागवत। गुरुभक्तिरसें परिप्लुत। साईकृपापात्रभूत। नित्य दीक्षित वाचिती।।८१।। जगदुद्धाराचिया कारणें। ब्रह्म्याठायीं जें नारायणें। पेरिलें तें मग नारद-क्षेत्रीं त्यानें। बीज आणिलें कणसासी।।८२।। जया क्षेत्राची दशलक्षणी। केली संवगणी बादरायणीं। शुकें परीक्षितीच्या खळ्यांत मळणी। केली निवडणी कणसांची।।८३।। स्वामी श्रीधरें मारलें हडप। स्वामी जनार्दनें केले माप। रसभरित पक्वान्नें उमाप। नाथप्रताप भोजन।।८४।। स्कंध एकादश त्यांतील जाण। भक्तिप्रेमसुखाची खाण। तें हें बत्तीसखणी वृंदावन। नित्य वाचन दीक्षितां।।८५।। दिवसा तयाचें करिती निरूपण। रात्रौ वाचिती भावार्थरामायण। हाही ग्रंथ गुर्वाज्ञा म्हणून। जाहला प्रमाण दीक्षितां।।८६।। भक्तिसुखामृताचें सार। ज्ञानेश्वरीचा द्वितीयावतार। तो हा नाथांचा मूर्त उपकार। महाराष्ट्रावर उदंड।।८७।। करोनियां प्रातःस्नान। नित्यनेम साईपूजन। अन्य देव देवतार्चन। नैवेद्य नीरांजन उरकतां।।८८।। मग श्रोत्यांसमवेत सविस्तर। पयःप्रसाद अल्पाहार। सारोनि नित्यक्रमानुसार। पोथी सादर वाचिती।।८९।। जया गोडिये सहस्त्र पारायणें। भगवत्परायण तुकारामानें। केलीं भंडाऱ्यावर एकान्तपणें। ते गोडी कवणें वर्णावी।।९०।। हा महाप्रासादिक दिव्य ग्रंथ। दीक्षित शिष्य निष्ठावंत। म्हणोनि जीवांच्या उद्धारार्थ। साईसमर्थ आज्ञापिती।।९१।। जाणें नलगे वनाप्रती। भगवंत प्रकटे उद्धवगीतीं। श्रद्धायुक्त जे पारायण करिती। भगवत्प्राप्ति रोकडी।।९२।। भारतीं संवाद कृष्णार्जुनांचा। त्याहूनि सरस हा कृष्णोद्धवांचा। तो या भागवतीं उपदेश साचा। प्रेमळ वाचा नाथांची।।९३।। असो ऐसा हा प्रासादिक ग्रंथ। ज्ञानदेव भावार्थदीपिका-समवेत। समर्थ कृपाळू साईनाथ। वाचवीत नित्य शिरडींत।।९४।। सखाराम हरी जोग। तयांस हा बाबांचा नियोग। साठ्यांचे वाडियांत हा योग। भक्तां उपयोग हा मोठा।।९५।। प्रत्यहीं या ग्रंथाचें श्रवण। बाबा कित्येक भक्तांलागून। श्रवण करविती कळवळून। भक्तकल्याणवांछेनें।।९६।। अगाध बाबांची अनुग्रहकुसरी। भक्तां उपदेशिती परोपरी। भक्त जवळीं वा देशांतरीं। बाबा अंतरीं सन्निधचि।।९७।। आपण जरी मशिदीं बसती। कोणाही कांहीं कार्य नेमिती। तयासी देऊनियां निजशक्ती। करवूनि घेती तें कार्य।।९८।। बापूसाहेब जोगांप्रत। वाड्यांत पोथी वाचाया सांगत। ते

ती वाचीत नित्य नेमस्त। श्रोतेही येत ऐकाया।।९९।। जोगही दुपारा भोजनांतीं। नित्य जाऊनि बाबांप्रती। चरण वंदूनि घेऊनि विभूति। आज्ञापन घेती पोथीचें।।१००।। कधीं वाचीत ज्ञानेश्वरी। कधीं ते नाथभागवतावरी। पारायण मांडीत आनंदनिर्भरीं। व्याख्यान करीत अर्थाचें।।१०१।। ऐसी अनुज्ञा झालियापाठीं। भक्त जे येती बाबांचे भेटी। कितीएकां पोथी ऐकावयासाठीं। उठाउठी पाठवीत।।१०२।। कधीं सांगत संक्षिप्त गोष्टी। श्रोता जों सांठवी निजकर्णसंपुटीं। तोंच बाबा म्हणती जा उठीं। त्या पोथीसाठीं वाड्यांत।।१०३।। श्रोता भावार्थी पोथीस जातां। निघावी पोथींतही ऐसीच कथा। कीं जी पूर्वील कथेची दृढता। अर्थावबोधकता पूर्ण करी।।१०४।। ज्ञानेश्वरांची ज्ञानेश्वरी। अथवा एकनाथांची वैखरी। बाबांच्या कथेचाच अनुवाद करी। श्रोतयां नवलपरी ही मोठी।।१०५।। एकाद्या पोथीचा विवक्षित भाग। वाचावा ऐसा नसतांही नियोग। पूर्वनिवेदित गोष्टीचा सुयोग। पोथींत जोग वाचीत।।१०६।। भगवद्‌गीता भागवत। मुख्यतः हेच दोन ग्रंथ। भागवतधर्माचें सारभूत। जोग हे नित्य वाचीत।।१०७।। गीता ज्ञानेश्वरी टीका। जया नांव ''भावार्थदीपिका'। भागवत एकादशस्कंध निका। परमार्थभूमिका नाथांची।।१०८।। असो या नित्यक्रमानुसार। भागवतवाचनाचा प्रचार। मींही तें वाचीं निरंतर। पडलें अंतर ते दिनीं।।१०९।। कथा एक अर्धी वाचिली। मंडळी मशिदीं जावया निघाली। वाचतां वाचतां पोथी ठेविली। धांव मारिली मी तेथें।।११०।। इच्छा ऐकाव्या बाबांच्या गोष्टी। बाबांच्या परी आणिक पोटीं। भागवत सोडूनि इतर कष्टीं। नाहींच तुष्टी तयांना।।१११।। येच अर्थीं नेटेंपाटें। राहिलें भागवत वाचविलें वाटे। ऐसें हें बाबांचें कौतुक मोठें। प्रेम लोटे आठवितां।।११२।। असो भागवती कथा संपली। उपकथाही येथें सरली। माधवरावांची पूजा आटपली। स्वारी आली बाहेर।।११३।। अहो बाबांचा निरोप आहे। तोच मी घेऊनि आलों पाहें। ''शामापासून पंधरा रुपये। दक्षिणा ये घेऊनि''।।११४।। बैसलों होतों सेवा करीत। अकस्मात तुमचें स्मरण होत। ''ऊठ शामाकडे जा म्हणत। दक्षिणेसीं परत ये''।।११५।। ''बैस म्हणाले तयांचे घरीं। विळभर तयांसवें वार्ता करीं। बोलून चालून परस्परीं। मग माघारीं तूं येईं''।।११६।। माधवराव जंव हें परिसत। झाले अत्यंत आश्चर्यचकित। रुपयांऐवजी नमस्कार सांगत। दक्षिणा म्हणत ही आमुची।।११७।। बरें असो एक झालें। पंधरा नमस्कार पदरीं बांधले। परि वार्ता करावयास या कीं वहिलें। म्हणूनि म्हटलें तयांस।।११८।। काय गोष्टी सांगतां सांगा। फेडा कीं माझ्या श्रवणपांगा। बाबांची निर्मळ यशगंगा। दुरितभंगा करू कां।।११९।। मग माधवराव म्हणती बैसा। या देवाचा खेळचि ऐसा। तुम्हीही सर्व जाणतसां। क्षणैक विसांवा घ्या बसा।।१२०।। हें घ्या पान हा घ्या काथ। चुना सुपारी आहे डब्यांत। हा मी आलों एका क्षणांत। टोपी डोक्यांत घालूनि।।१२१।। अगाध साईबाबांच्या लीला। किती म्हणूनि मी सांगूं तुम्हांला। आपण काय थोड्या देखिल्या। शिरडीस आल्यापासोनि।।१२२।। मी तों केवळ खेडवळ। आपण शहरवासी सकळ। काय वानाव्या आपणाजवळ। लीला अकळ तयांच्या।।१२३।। येतों म्हणूनि घरांत गेले। देवास फूल पान वाहिलें। तात्काळ टोपी घालूनि आले। बोलत बैसले मजसवें।।१२४।। काय देवाची अतर्क्य लीला। कोण जाणेल याची कळा। अंत नाहीं याच्या खेळा। खेळूनि खेळानिराळा।।१२५।। काय तुम्ही विद्येचे भोक्ते। एकाहूनि एक ज्ञाते। आम्हां गांवढळां काय कळतें। चरित्र अकळ तें बाबांचें।।१२६।। ते काय गोष्टीवार्ता न सांगती। आम्हांपाशीं किमर्थ पाठविती। त्यांची करणी तेच जाणती। मानवी वृत्ती नाहीं ती।।१२७।। आलेंच आतां ओघावरी। गोष्टही मज आठवली बरी। करूं वार्ता कांहींतरी। वेळ साजरी करूं कीं।।१२८।। प्रत्यक्ष आमुचे दृष्टीसमोर। कथितों येथें घडलेला प्रकार। जया मनीं जैसा निर्धार। तैसा ते पार पाडिती।।१२९।। कधीं कधीं बाबाही किती। मनुष्याचा अंत पाहती। भक्ति प्रेम कसास लाविती। तेव्हांच देती उपदेश।।१३०।। 'उपदेश' हा शब्द कानीं पडतां। स्मरली साठ्यांची गुरुचरित्रकथा। सकृद्दर्शनीं जणूं विद्युल्लता। चमकली चित्ता माझिया।।१३१।। नसेल का ही शामाची

योजना। मशिदींतील मम चंचल मना। स्थैर्य आणावयालागीं कल्पना। अघटित घटना बाबांची।।१३२।। असो ही जी उठली वृत्ति। तैसीच दाबूनि ठेविली चित्तीं। कथाश्रवणीं दुणावली आर्ती। तियेची पूर्ती संपादूं।।१३३।। मग बाबांच्या गोष्टी वार्ता। थोड्या थोड्या सुरू होतां। आनंद वाटूं लागला चित्ता। भक्तवत्सलता पाहूनि।।१३४।। पुढें आणिक कथा सांगती। म्हणती एक देशमुखीण होती। तियेच्या पहा आलें चित्तीं। संतसंगती करावी।।१३५।। ऐकूनि साईबाबांची कीर्ति। संगमनेरचे लोकांसंगतीं। आली बाई शिरडीप्रती। दर्शनप्रीतीं बाबांच्या।।१३६।। खाशाबा देशमुखाची ही आई। नाम इयेचें राधाबाई। निष्ठा धरूनि साईंचे पायीं। दर्शन घेई साईंचें।।१३७।। दर्शन घडले यथासाङ्ग। गेला मार्गींचा शीणभाग। जडला श्रीचरणीं अनुराग। कार्यभाग आठवला।।१३८।। होती तियेच्या मनीं आर्त। गुरु करावे साईसमर्थ। करितील उपदेश यथार्थ। जेणें परमार्थ साधेल।।१३९।। बाई वयानें म्हातारी। निष्ठा अत्यंत बाबांवरी। मिळावा उपदेश कांहींतरी। निर्धार अंतरीं हा केला।।१४०।। बाबा जोंवरी मजला स्वतंत्र। देती न एकादा कानमंत्र। करिती न मज कृपापात्र। तोंवरी अन्यत्र जाणें ना।।१४१।। व्हावा साईमुखींचाच मंत्र। घेतां इतरत्र तो अपवित्र। श्रीसाई संताग्रणी पसिवत्र। अनुग्रहपात्र मज करो।।१४२।। करूनि ऐसा अंतःकरणें। दृढनिश्चय त्या बाईनें। वर्ज्य करूनि खाणें पिणें। घेऊनि धरणें बैसली।।१४३।। आधींच वयानें म्हातारी। पोटांत अन्न नाहीं तिळभरी। पाणीही पिईना घोटभरी। श्रद्धा भारी उपदेशीं।।१४४।। तीन दिवस अहर्निशीं। म्हातारी राहिली उपवाशी। बाबा उपदेश देतील जे दिशीं। प्रयोपवेशी तोंवरी।।१४५।। मंत्रोपदेश घेतल्याविणें। किमर्थ शिरडीचें जाणें येणें। उतरल्या स्थळीं घेतलें धरणें। निर्वाण तिणें मांडिलें।।१४६।। अन्न पान केलें वर्जन। ऐसें तप तें तीन दिन। करितां कष्टली देशमुखीण। उदासीन बहु झाली।।१४७।। माधवरावांस विचार पडला। प्रकार हा तंव नाहीं भला। काय करावें या भवितव्याला। म्हातारी मरणाला भिईना।।१४८।। मग ते जाऊनि मशिदीसी। बैसते झाले बाबांपाशीं। नित्याचिया कुशलवृत्तासी। आदरेंशीं ते पुसत।।१४९।। ''शामा आज काय विचार। ठीक आहे ना समाचार। तो नारायण तेली चळला फार। गांजी अनिवार मजलागीं''।।१५०।। पाहोनि म्हातारीचा विचार। शामा आधींच कष्टी फार। कैसें करावें तरी साचार। पुसे निर्धार बाबांसी।।१५१।। हें काय गौडबंगाल देवा। खेळ आपुला इतरां न ठावा। त्वां माणसें एकेक आणावीं गांवा। आम्हां पुसावा विचार।।१५२।। ती देशमुखीण वयातीत। अन्नपाण्याविरहित। राहिली तीन दिवस उपोषित। तुजवरी हेत धरूनि।।१५३।। म्हातारी ती परम हट्टी। तुझिया पायीं निष्ठा कट्टी। तूं तों तीस न पाहसी दृष्टीं। करितोस कष्टी कां तीस।।१५४।। आधींच तें शुष्क काष्ठ। दुराग्रही महा खाष्ट। अन्नावीण वाटतें स्पष्ट। प्राणचि नष्ट होतील।।१५५।। म्हणतील म्हातारी गेली दर्शना। उपदेशाची धरूनि वासना। साईबाबांसी नाहीं करुणा। केलें मरणाधीन तिला।।१५६।। बाबा घडों न द्या ऐसा प्रवाद। सांगोनि तिचा तिला हितवाद। कराना कां तिजवरी प्रसाद। हा अप्रमाद निरसा कीं।।१५७।। अंगांत नाहीं उरलें त्राण। कासावीस होतील प्राण। म्हातारी ती पावेल मरण। तुम्हांसी अपशरण येईल।।१५८।। म्हातारीचें दुर्धर व्रत। आम्हांसी पडली चिंता बहुत। दुर्दैवें म्हातारी जालिया मृत। गोष्ट अनुचित घडेल।।१५९।। म्हातारीनें मांडिला त्रागा। न करितां तिजवरी कृपानुरागा। दिसे न धडगत तिची मला गा। स्वमुखें सांगा तीस कांहीं।।१६०।। झाली सीमा अध्यायाची। पुढील श्रवणेच्छा श्रोतयांची। पुढील अध्यायीं पुरेल साची। प्रेमरसाची ती जोड।।१६१।। पुढें बाबांनीं प्रेमळपणें। उपदेश जो केला त्या म्हातारीकारणें। तयाचिया सादर श्रवणें। उठेल धरणें अविद्येचें।।१६२।। हेमाड साईपायीं शरण। श्रोतयां घाली लोटांगण। अल्पायासें भवतरण। कराया श्रवण तत्पर व्हा।।१६३।। स्वस्ति श्रीसंतसज्जनप्रेरिते। भक्तहेमाडपंतविरचिते। श्रीसाईसमर्थसच्चरिते। मदनुग्रहो नाम अष्टादशोध्यायः संपूर्णः।।

।।श्रीसद्‌गुरुसाईनाथार्पणमस्तु।। शुभं भवतु।।

==